तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) कोलकाता

राजभाषा पत्रिका

सजल

अंक-3, सितंबर 2024

प्रकाशक

मुख्यालय
तटरक्षक क्षेत्र (उत्तर पूर्व)
6वाँ तल, सिंथेसिस बिजनेश पार्क
न्यू टाउन, राजरहाट
कोलकाता-700161

संपादन मंडल

उप महानिरीक्षक आर रमेष, त.प.
मुख्य स्टाफ अधिकारी (का. व प्र.)

श्री आलोक कुमार राय
असैन्य कार्मिक अधिकारी
क्षेत्रीय हिन्दी अधिकारी

श्री गुड्डू कुमार शर्मा
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
प्रभारी हिंदी अनुभाग

संदेश

महानिरीक्षक इकबाल सिंह चौहान, त.प.
कमांडर, तटरक्षक (उ.पू.)

मेरे लिए यह काफी गर्व और हर्ष का विषय है कि तटरक्षक क्षेत्र (उत्तर-पूर्व) के द्वारा राजभाषा ई-पत्रिका 'सजल' के अंक तीन (03) का प्रकाशन किया जा रहा है| राजभाषा 'हिंदी' के प्रति हमारा लगाव, प्रेम और उत्तरदायित्व ने हमें इस पत्रिका के प्रथम अंक के प्रकाशन के लिए प्रेरित किया और आज इसका तीसरा अंक भी प्रकाशित किया जा रहा है|

जैसा कि आप सभी को ज्ञात है कि संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया और यह वर्ष राजभाषा का हीरक जयंती वर्ष है| 'सजल' पत्रिका का अंक तीन (03) राजभाषा हीरक जयंती का साक्षी भी बनेगा| हिंदी ही वह भाषा है जिसने स्वतंत्रता आंदोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बांधने का अभूतपूर्ण कार्य किया है। आज़ादी की लड़ाई के समय अनेक भाषाओं एवं बोलियों में बंटे देश में संवाद भाषा के रूप में हिंदी को स्वीकार किया गया और इसने भारत के सभी जनमानस को एकता के सूत्र में बांध दिया| इसी कारण लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों या फिर राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थी|

आज मैं सिर्फ हिंदी को कार्यालय तक सीमित रखने की बात नहीं करता| मैं हमेशा अपने जवानों से हिंदी भाषा को पारिवारिक संवाद की भाषा बनाने के लिए जोर देता हूँ| हम सभी को अपने बच्चों को भी हिंदी भाषा का ज्ञान देना चाहिए जिससे वह हमारी सभ्यता और संस्कृति की विशाल धरोहर को सहजता के साथ समझ और स्वीकार कर सकें|

जैसा कि अभी तक राजभाषा पत्रिका 'सजल' का प्रकाशन कार्यालय में उपलब्ध स्त्रोतों की मदद से बनाया गया है इसके लिए किसी भी प्रकार की बाह्य सहायता प्राप्त नहीं की गई है| इसके लिए मैं संपादन मंडल को बधाई देता हूँ तथा इस पत्रिका की पूर्ण सफलता की कामना करता हूँ|

(इकबाल सिंह चौहान)
महानिरीक्षक
कमांडर
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

संदेश

उप महानिरीक्षक हिमांशु नौटियाल, त.प.
स्टाफ प्रमुख

भारतीय तटरक्षक बल ने विगत चार दशकों से भी अधिक समय से समर्पित सेवा भावना के साथ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाई है और तटीय क्षेत्रों में राष्ट्र के हितों की रक्षा सुनिश्चित की है| अपनी प्रतिबद्धता को सुनिश्चित करने के साथ-साथ भारतीय तटरक्षक राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए विशिष्ट भूमिका निभा रहा है| तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) द्वारा राजभाषा पत्रिका 'सजल' का अंक-3 का प्रकाशन इस तथ्य को साकार करता है| मुझे आशा है कि यह अंक हर दृष्टि से उत्तम एवं पठनीय होगा|

यह विषय ध्यान देने योग्य है कि हिंदीत्तर भाषी क्षेत्र में होने के बावजूद भी इस मुख्यालय तथा अधीनस्थ कार्यालयों एवं पोतों में कार्यरत अधिकारी एवं कार्मिक भी अपने सहज योगदान द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं| 'सजल' पत्रिका के माध्यम से न केवल राजभाषा कार्यान्वयन की गति बढ़ेगी बल्कि यह पत्रिका भारतीय संस्कृति के उत्थान में सहायक सिद्ध होगी|

सजल' के अंक-3 हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ एवं पत्रिका के प्रकाशन कार्य से परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कार्मिकों को मेरी तरफ से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ|

हिमांशु नौटियाल

(हिमांशु नौटियाल)
उप महानिरीक्षक
स्टाफ प्रमुख
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

संपादकीय

उप महानिरीक्षक आर रमेष, त.प.
मुख्य स्टाफ अधिकारी (का. व प्र.)

राजभाषा पत्रिका 'सजल' के अंक-3 को प्रबुद्ध पाठकों को अर्पित करते हुए मुझे काफी खुशी हो रही है| इस पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य इस मुख्यालय तथा इसके अधीनस्थ कार्यालयों तथा पोतों में कार्यरत अधिकारियों एवं कार्मिकों के बीच राजभाषा हिंदी में लेखन तथा पठन-पाठन को उच्च स्तर पर ले जाना है|

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है| प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेन्दु जी ने लिखा है कि " निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल" अर्थात अपनी भाषा की उन्नति की सभी प्रकार की उन्नति का मूल होता है| किसी भी राष्ट्र की पहचान इस बात पर भी निर्भर करती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक और समृद्ध बनाया है| इसी उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए भारत सरकार हिंदी भाषा के साथ अन्य भारतीय भाषाओं को विकसित करने का कार्य कर रही है|

इस पत्रिका का प्रकाशन इस मुख्यालय का एक छोटा सा प्रयास है जिसके माध्यम से हम यह सिद्ध कर सके कि राजभाषा के विकास एवं प्रचार-प्रसार के लिए तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) का प्रयास हमेशा जारी रहेगा| पाठकों से मिलने वाली सकारात्मक प्रतिक्रिया हमारे मनोबल को बढ़ाती है| अत: पाठकों से अनुरोध है कि वे अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराएं|

(आर रमेष)
उप महानिरीक्षक
मुख्य स्टाफ अधिकारी (का. व प्र.)
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान ; निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केन्द्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से, अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे, अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	अंतर्द्वंद	1
2.	मैं दो बेटियों का बाप हूँ	2
3.	जीवन	3
4.	खबर	4
5.	हे तटरक्षक के जवान तुझे सलाम	5
6.	मैं हिन्दुस्तानी हूँ	6
7.	मुट्ठी भर आकाश चाहिए	7
8.	मुस्कुराना इतना भी मुश्किल नहीं	8
9.	मन	9
10.	सच्चाई की राह	10
11.	सबकी अपनी कहानी है	11
12.	मित्रता	12
13.	सकारात्मकता	13
14.	ये सारा जहां तुम्हारा है	14
15.	मौसम बदलते रहते हैं	15
16.	सकारात्मक सोच	16
17.	राजस्थान भ्रमण यात्रा वृतांत	17
18.	मैं तटरक्षक का नाविक हूँ	18
19.	जिन्दगी बांसुरी सी हो गई	19
20.	झूठ जब सर उठाये	20
21.	जीवन की राहें	21
22.	बेटियाँ	22
23.	मैं सवेरा हूँ	23
24.	सुंदरवन और संरक्षण	24
25.	खटमिट्ठियाँ	25
26.	ओलंपिक 2024 की समीक्षा	26
27.	भिखारी की हालत	27
28.	पर्यावरण	28-29
29.	तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) द्वारा विभिन्न गतिविधियां	30-40

अंतर्द्वंद

उप समादेशक विपिन भारद्वाज (1087-S)
भारतीय तटरक्षक अवस्थान कोलकाता

मैं मैं से हार गया
मैं क्यों अनजान रहा।
ऐसी भी क्या चूक रही
जो मेरा ये अंजाम रहा। ।

पहले भी हार तो झेली थी
द्वंद लड़ा विजयीमान रहा।
क्यों लड़ाई से पहले इस बार
शक्ति का बलिदान चढ़ा। ।

फौलाद है सीना अभी भी
विचलित क्यों फिर मन है।
अन्तर्ध्यान को नोचती
कैसी ये जकड़न है। ।

जकड़ती बेड़ियों में तो
अर्जुन ने भी था खुद को पाया।
उसको पार लगाने को
कोई ग्वाला था शायद आया। ।

मैं ग्वाले को ढूंढ थका
मिला वो एकाग्र मन में।
मैं जान गया मैं क्यों हारा
मैं हारा था अपने मन से। ।

मैं दो बेटियों का बाप हूँ

श्री गुड्डू कुमार शर्मा, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.), कोलकाता

मैं दो बिटियों का बाप हूँ|
वर्तमान के घटनाक्रम से भयभीत, व्यथित, चिंतित और हैरान हूँ|
अभी मैं जिंदा हूँ, मरा नहीं, तभी तो परेशान हूँ|

क्या इसी समाज की कल्पना बापू ने की थी|
क्या इस लिए सुभाष, चन्द्रशेखर, भगत सिंह और अनेकों शहीदों ने कुर्बानी दी थी|
आज दोष अंग्रेजों को भी नहीं दे सकते,
जब अपने ही धोखा दें,
तो बताओं कहाँ जाए और रोये?

सदियों से सदा हम सभ्य हैं,
फिर यह असभ्यता कहाँ से आई?
मुझे कोई बताए,
यह मानसिकता हमने कहाँ से पाई?

इसमें फ़िल्मी दुनियाँ ने भी खूब रंग दिखाया है
कपड़े उतारकर उसने खूब नाम कमाया है|
अगर चिरकुट पहन ले कोई हीरों'
पहनेंगे वही, दिखे सब चाहे जीरों|

सोझ समझकर चलो, ए वासी वतन!
नहीं तो मिट जाएगा यह चमन|
समय रहते संभल जाओं,
अपने व्यवहार में परिवर्तन लाओं|
क्योंकि समय का सब फेर है,
आज कोई और, तो कल तू है|

आचार-विचार शुद्ध, साफ और नेक हो,
तभी समाज बदलेगा,
आज तू कंवारा है, कभी तो बाप में बदलेगा|
मैं दो बेटियों का बाप हूँ|
अभी मैं जिंदा हूँ, मरा नहीं, तभी तो हैरान हूँ, परेशान हूँ|

जीवन

अविनाश कुमार, फोरमेन स्टोर
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.), कोलकाता

जरा जरा सी बात उछाला ना कीजिए,
गमों का बोझ दिल में पाला ना कीजिए|
बनकर अश्क बहे तन्हाई में जो सदा
यादों को इस कदर संभाला ना कीजिए
रास हमको आजकल रौशनी आ गई,
रुख से हटा नकाब, उजाला कीजिए|
जीवन में सांसों का भरोसा क्या भला
हर एक काम कल पे टाला ना कीजिए
रूठकर यूं बार बार जाते हो किस लिए,
दम इस तरह से आप निकाला ना कीजिए..

खबर

धर्मेंद्र कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.), कोलकाता

मैं खबर हूँ, आज की ताज़ा खबर
जरा डालो तो मुझ पर सरसरी नजर
मैं जीवन में नित नूतन रंग भरती हूँ
अकेले मन को दुनियाँ से जोड़ती हूँ

कभी नीरस तो कभी सनसनीखेज हूँ
भर दूँ रोमांच, चीज बड़ी हैरत अंगेज हूँ
मैं तरह - तरह की बातें बताती हूँ
सूने दिल में अनगिन अरमान जगाती हूँ

किसी की सफलता का सुंदर राग हूँ
तो कभी असफलता का कलुषित दाग हूँ
रंग-बिरंगी बड़ी , जैसे इंद्रधनुषी आब हूँ
तो कभी सच को छिपाती सुंदर नकाब हूँ

तन्हा दिल मुझमें किरदार अपना ढूँढता है
तो कभी मुझमें ही गम अपने भूलता है
मैं खबर हूँ-देखो मुझे, मै चीज लाजवाब हूँ
आइना हूँ कभी, तो कभी धधकती आग हूँ

हे तटरक्षक के जवान तुझे सलाम

मुहम्मद अबू कमर
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, एस/02452
तटरक्षक जिला मुख्यालय संख्या -7, पारादीप

हे तटरक्षक के जवान तुझे सलाम
तुम हो इस देश की आन बान और शान, तुम्हें सलाम
आदित्य सिंधु का भार तुम्हारे काँधे पर
तुम्हारी वीर गाथा को सलाम

चाहे जैसा भी हो समुद्र
अपने कर्त्तव्य के आगे
तुम्हारे आत्म समर्पण को सलाम

कुछ नशा इस तिरंगे का
और कुछ नशा इस देश की मिट्टी का
तुम्हारी इस देश भक्ति के जज़्बे को सलाम

जिनमें अकेले चलने का हौसला होता है
पूरा काफिला उनके पीछे होता है
देश के लिए इस हौसले को सलाम

भारत माता तुम्हारी वीर गाथा
सबसे ऊँची तुम्हारी शान
जन्म लूं दोबारा इस मिट्टी में
देश की इस मिट्टी को सलाम

मैं हिन्दुस्तानी हूँ

समादेशक (क . व.) रविन्द्र कुमार
भा. त. र. पोत अमोघ, पारादीप

मैं राम का अभिमान हूँ ,
रावण स बुद्धिमान हूँ।
हनुमान सा बलवान हूँ ,
मैं ब्रह्मा का वरदान हूँ।

मैं यीशु का सन्देश हूँ ,
गुरु नानक का उपदेश हूँ।
नबी की दी सीख हूँ ,
मैं गौतम बुद्ध की रीत हूँ।

मैं वाद हूँ, विवाद हूँ ,
मैं एक अपवाद हूँ।
हूँ शांति का प्रतीक भी ,
मैं युद्ध शंखनाद हूँ।

घटा सा घनघोर हूँ ,
कृष्ण सा चितचोर हूँ।
मैं चाँद का चकोर हूँ ,
विनम्र हूँ विभोर हूँ ॥

तेजस्वी ओझस्वी हूँ ,
मेदस्वी यशस्वी हूँ ,
हूँ करुना का स्वरुप भी ,
मैं ब्रह्मावर्चस्वी हूँ ॥

मैं ठोस हूँ सशक्त हूँ ,
परिपक्व हूँ मदमस्त हूँ।
वतन पे जां जो झोंक दें ,
वो सच्चा देशभक्त हूँ

ब्रह्मांड ह्रदय विशाल हूँ ,
मैं विध्वंशक भूचाल हूँ।
कलयुग के प्रकोप से ,
मैं नैतिकता की ढाल हूँ ॥

हिमालय सा डटा रहूँ ,
लता सा सटा रहूँ।
हिंद सा सदा बहूँ ,
अत्याचार न सहूँ ॥

सत्य का मैं साथ दूं ,
रक्त का प्रताप दूं।
मानवता के धर्म पे ,
ना आने कोई आंच दूं ॥

लहरों से लड़ना है सीखा ,
तूफानों को है झुठलाया।
है काली रातें भोगी मैंने ,
तब सूरज सा मैं उग पाया ॥

हैं प्राणों की आहुति दी ,
तन पे कोड़ों को चलवाया।
तब जा कर मैंने सर पे ,
ये ताज – ए – तिरंगा है पाया ॥

मैं बैरी से लड़ जाता हूँ ,
निर्बल को गले लगता हूँ ,
मैं शान से आगे बढ़ता हूँ ,
मैं हिंदुस्तान कहलाता हूँ ॥

जिस बंदे को दिन की पेट भर रोटी नहीं मिलती, उसके लिए इज्जत और मर्यादा सब ढोंग है।- मुंशी प्रेमचंद

मुट्ठी भर आकाश चाहिए

विजय कुमार झा, अनुभाग अधिकारी
तटरक्षक जिला मुख्यालय सं. 8, हल्दिया

यूँ तो दिल को झुठलाने को,
सारे साधन भरे पड़े हैं ।
जय जयकार मचाने वाले,
उल्लासित कर जोड़ खड़े हैं।
फिर भी मन के टूटे तारों,
को थोड़ा विश्वास चाहिए।
मुट्ठी भर आकाश चाहिए।।

दो पग जितना ही चल पाएँ,
उतनी-सी हो धरती अपनी।
नीरस आँखों के झुरमुट में,
हो ना कोई अधूरा सपना।
जहाँ शांति की शंख बजे बस,
वहीं और कुछ साँस चाहिए।
मुट्ठी भर आकाश चाहिए।।

स्वप्न सरीखा ना हो जीवन,
बिन फूलों का ना हो उपवन।
कोई न जग में रहे अकिंचन,
ना कोई ले ले सारा साधन।
जल-सा निर्मल मन हो अपना,
स्वेद से भीगा तन हो अपना।
ना सावन मधुमास चाहिए।
मुट्ठी भर आकाश चाहिए।।

मुस्कुराना इतना भी मुश्किल नहीं

एकता गुप्ता, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
तटरक्षक जिला मुख्यालय सं. 8, हल्दिया

मुस्कुराना इतना भी मुश्किल नहीं
थोड़ा मुश्किल हो सकता है,
पर सच कहूँ ..
मुस्कुराना इतना भी मुश्किल नहीं ।
जिंदगी को उलझनों को सुलझाना
थोड़ा मुश्किल हो सकता है,
पर सच कहूँ ..
उलझनों में भी मुस्कुराना इतना भी मुश्किल नहीं।
भीड़ से भरी बस में,
खिड़की वाली जगह मिल जाना,
बारिश की किच - किच से विरक्त मन को,
उसी कीचड़ में छप-छप करते नन्हे क़दमे का दिख जाना,
बड़ी बात का होना थोड़ा मुश्किल हो सकता है,
पर सच कहूँ ...
छोटी-छोटी बातों में मुस्कुराना इतना भी मुश्किल नहीं ।
अनजान रास्तों पर
किसी जानी – पहचानी शक्ल का दिख जाना,
दिन की जद्दोजहद से जूझकर थके मन को
अगले चौराहे पर गोलगप्पे खाते, पुराने दोस्तों का दिख जाना,
हर रोज दोस्तों से मिलना थोड़ा मुश्किल हो सकता है,
पर सच कहूँ ..
कभी थोड़ा समय उनके हिस्से का भी निकाल लेना
इतना भी मुश्किल नहीं ।
थोड़ा मुश्किल हो सकता है
पर सच कहूँ ..
मुस्कुराना इतना भी मुश्किल नहीं

मन

कविता सिंह, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
तटरक्षक जिला मुख्यालय सं. 8, हल्दिया

मन की चंचलता, मन की विचलता
को तू क्या जाने ?
निकलता है कमान से तीर जिस तरह
मन भी चहुं दिशाओं में विचरता है उसी तरह,

ना कोई रोक ना कोई टोक
घूमता है कभी खुशी की छाँव में
तो कभी अवसाद के घेरों में
मन की चंचलता को कौन जाने?

मन की चंचलता कभी असमान तक जाती है
कभी जमीन पर लाती है
ये मन निरंकुश, निराकृत है
इसकी चंचलता को कौन जानें?

सच्चाई की राह

विरेन्द्र सिंह, उत्तम नाविक
तटरक्षक जिला मुख्यालय सं. 8, हल्दिया

सच्चाई की राह में चलना कठिन है
हर कदम पर होता संघर्ष और चुनौतियों का बंधन है।
झूठ और फरेब के अंधेरों में
सच्चाई का दीपक जलाना कठिन है।
फिर भी वो, जो इस राह पर चलता है
हर विपत्ति को हंस कर सहता है।
उसकी ईमानदारी की चमक होती है निराली,
सच की राह में मिलता है उसे सच्चा सवाली
लोग चाहें माने या न माने,
सच्चाई की कीमत वो पहचानें।
अपने सिद्धांतों पर अडिग रहता है,
सच की राह पर खुद को सदा सही साबित करता है ।
कभी-कभी होती है तन्हाई की शाम,
सच्चाई की राह पर, नहीं मिलता कोई साथ।
पर जो दिल से सच्चा होता है,
वो कभी नहीं हारता, न थकता है ।
सच्चाई की राह में है जीत की चमक,
भले ही हो मुश्किल, भले ही हो धूमिल।
लेकिन अंत में वही पाता है सुख और चैन,
जो सच्चाई की राह पर चलता है बेधड़क ।
तो चलों हम भी इस राह पर चलें,
सच की रोशनी में अपने जीवन को ढालें।
झूठ और छल का त्याग करें,
सच्चाई की राह में अपने कदम धरें।

सबकी अपनी कहानी है

बंसी लाल, प्रधान अधिकारी
तटरक्षक जिला मुख्यालय सं. 8, हल्दिया

वो ऐसा है, वो वैसा है कौन जाने, कौन कैसा है।
इतना ना किसी की जिंदगी में झाँका करो
दूसरों पर उँगली उठाने से पहले,
खुद को उस जगह पर रखकर आंका करों
किनारों पर बैठकर, यूं ना अंदाज़े लगाया करों,
जिस बात का पूरा पता नहीं, उसको ना बताया करों।
सबकी अपनी – अपनी जिंदगी और अपनी – अपनी कहानी है ।
किसी के होठों पर मुस्कान
तो किसी की आँखों में पानी है।

मित्रता

सौरभ कुमार गुप्ता, चार्जमैन एस/02540
वायु उपदान मरम्मत इकाई (हल्दिया)

मित्र, सखा, संगी, संबंधी
इतने रूप लिए हैं चितवन ने |
कौन है अपना कौन पराया
कभी सोचा है तुमने सपने में |
चलो ये भूल करते हैं
और आज हम भी उनको याद करते हैं |

बेगरज बातें हो जिससे
दिल की हर साझेदारी हो उनसे |
अपनेपन का हो एहसास,
खुशियाँ बिखेरती उनकी हर बात |

एक ऐसा रिश्ता है यारी,
सब रिश्तों के ऊपर ये भारी |
एक पतंग तो एक डोर है यारी,
तभी तो हो इससे साझेदारी|

यारी जो है एहसास
यारी जो है विश्वास
यारी जो है आस
मेरे लिए पर है वो खास|

जीवन इतना उलझा हुआ है,
और इसे ना उलझाओ |
चलो इस उम्र में भी
बचपन-सा साथ निभाओं |

दिल में सबके एक कोना है खाली,
दिल के उस कोने को भर लो |
और किसी अपने के अपने बन लो |
खुलकर जिससे बात कर लो,
मन अपना हल्का कर लो |
और मुस्कुरा कर कह दो
हाँ ये वही है
मेरा निस्वार्थी मित्र, सखा, सगी सम्बन्धी|

सकारात्मकता

कविता सिंह, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
तटरक्षक जिला मुख्यालय सं. 8, हल्दिया

जीवन में सकारात्मक रहना आवश्यक है। विकट/विषम परिस्थितियां जीवन में सदैव बनी ही रहती हैं। यह बात नजरिए की भी है कि हम उन परिस्थितियों को किस प्रकार देखते हैं। अंधेरे में भी किसी को आशा की छोटी किरण दिख ही जाती है और किसी को भरे उजाले में अंधेरा दिखता है, विकलांग भी जीवन हँसते – खेलते विभिन्न समस्याओं से उलझते हुए भी जी ही लेते हैं परंतु जिन्हें खुदा ने सब कुछ दिया है, वो ही अपने जीवन में खुशी नहीं खोज पाते हैं।

एक छोटी-सी कहानी बस नजरियों पर है कि एक महिला थी, जो स्वस्थ, खुशमिजाज और सक्रिय थी। भगवान ने उनकों सब कुछ दिया था। लेकिन एक घटना ने उनकी जिन्दगी बदल दी और उन्होंने अपने पैर एक हादसे में खो दिया । जान तो बच गयी उनकी और जहाँ सब हार कर बैठते हैं, वहीं से उन्होंने शुरूआत की । इनका नाम अरूणिमा सिन्हा है, उन्होंने अपने दोनों पैर गँवाने के बाद भी जीवन से हार नहीं मानी और देश की पहली ऐसी विकलांग महिला है जिन्होंने एवरेस्ट पर चढ़ाई की।

यह कहानी बस नजरिये को दिखाती है कि नजरियाँ बदल कर आप बदलाव ला सकते हैं। बस जीवन में परिस्थितयां को देखने के नजरियों को बदलकर हम अपने जीवन को बदल सकते हैं ।

ये सारा जहां तुम्हारा है

सौरभ कुमार गुप्ता, चार्जमैन एस/02540
वायु उपदान मरम्मत इकाई (हल्दिया)

अगर तुम तब भी अपने दिमाग पर काबू रख सकते हों
जब सभी बेकाबू होकर तुम्हे दोष दे रहें हों।
अगर तुम खुद पर भरोसा रख सकते हों जब सब तुम पर शक करें
परन्तु उनकी शिकायतों को भी तवज्जो दे सकते हों।
अगर तुम प्रतीक्षा कर सकते हों और प्रतीक्षा से थमों नहीं,
या झूठ का सामना करने पर झूठे बनो नहीं,
या घृणा का सामना करने पर घृणा करो नहीं,
फिर भी अति समझदार दिखो नहीं, और अति बुद्धिमान बनो नहीं।

अगर तुम अपने सपने देख सकते हों बिना सपनों के गुलाम बनें,
अगर तुम सोच सकते हों बिना सोच का दास बनें,
अगर तुम हार और जीत दोनों का सामना कर सकते हों
और दोनों ढोंगियों से एक-सा व्यवहार कर सकते हों
अगर तुम अपने द्वारा बोले गए सच को दुष्टों के तोड़ने-मरोड़ने पर बर्दाश्त कर सकते हों
या जिन चीजों को तुमने अपनी ज़िन्दगी दी उन्हें बिखरते हुए देख सकते हों
और झुक कर फिर से उन टूटी वस्तुओं से अपना जहाज बना सकते हों|

अगर तुम अपने जीवन की कमाई को एक साथ रख कर कंचे खेल सकते हों
और सब कुछ हार कर फिर से शुरुआत कर सकते हो, अपनी पराजय को गुप्त रखते हुए।
अगर तुम तब भी आगे बढ़ सकते हो जब तुम्हारा दिल,
तुम्हारी नसें और अस्थि-मांसपेशियाँ भी जवाब दे दें,

अगर तुम डटे रह सकते हो जब तुम्हारे अन्दर कुछ शेष बचा न हो
सिवाय इस इच्छाशक्ति के जो कहती है, "डटे रहों"।
अगर तुम भीड़ से बात कर के भी अपनी नैतिकता बनाये रख सकते हो
और राजाओं के साथ चलकर भी आम व्यक्ति रह सकते हो।
अगर तुम्हारा दिल, न ही दुश्मन और न ही दोस्त दुखा सके,
अगर सब तुम पर भरोसा रख सकते हो पर कोई जरुरत से ज्यादा नहीं,
अगर तुम हर प्रतिकूल मिनट को साठ-सेकेंड दौड़ की उर्जा से भर सकते हो,
तो ये सारा जहां और इस जहां का सब कुछ तुम्हारा है।

मौसम बदलते रहते हैं

चेतन, नाविक (पी)
भारतीय तटरक्षक पोत अमृत कौर

मौसम बदलते रहते हैं,
फूल खिलते, मुरझाते हैं।
समय की इस यात्रा में,
हम भी चलते जाते हैं।

हवाओं की तरह बेफिक्र,
रंगों की तरह अद्भुत,
खुशियों की तलाश में,
हम आगे बढ़ते रहते हैं।

कभी धूप, कभी छांव,
कभी खुशियाँ, कभी दर्द,
जीवन के इस सफर में,
रंग-बिरंगे हैं हर पल।

जीवन एक सुंदर कविता है,
हर पल को संजोना सीखो।
हँसते-गाते, बढ़ते चलो,
हर मौसम का आनंद लो।

यह रास्ते कभी खत्म नहीं होतें,
बस चलते रहो, मुस्कुराते रहो।

सकारात्मक सोच

अखिलेश, नाविक (आर ओ)
भारतीय तटरक्षक पोत अमृत कौर

एक गाँव में एक किसान रहता था। उसके पास एक पुराना बैल था। एक दिन बैल कुएँ में गिर गया। किसान बहुत चिंतित हो गया, लेकिन उसने सोचा कि अब इसे बचाना मुश्किल है। इसलिए उसने कुएँ को मिट्टी से भरने का निर्णय लिया।

किसान और उसके पड़ोसियों ने मिट्टी डालनी शुरू की। जैसे-जैसे मिट्टी बैल पर गिरती, वह उसे झटककर अपने ऊपर से गिरा देता और ऊपर चढ़ता जाता। किसान ने देखा कि बैल हार नहीं मान रहा है और लगातार ऊपर चढ़ने की कोशिश कर रहा है।

आखिरकार, बैल इतनी मिट्टी के ऊपर चढ़ गया कि वह कुएँ से बाहर निकल आया। किसान ने देखा कि बैल न केवल जीवित है, बल्कि और भी मजबूत हो गया है।

इस कहानी से सीखने वाली बात यह है कि जीवन में कितनी भी मुश्किलें आएँ, हमें हार नहीं माननी चाहिए। अगर हम धैर्य और साहस के साथ हर मुश्किल का सामना करेंगे, तो कोई भी चुनौती हमें रोक नहीं पाएगी। संकट के समय में भी सकारात्मक रहकर, हम अपनी समस्याओं से ऊपर उठ सकते हैं और सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

राजस्थान भ्रमण यात्रा वृतान्त

राहुल लमोरिया, नाविक
भारतीय तटरक्षक पोत अमृत कौर

राजस्थान, जिसे 'राजाओं की भूमि' कहा जाता है, अपने अद्वितीय इतिहास, संस्कृति, और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विश्व प्रसिद्ध है। मेरी राजस्थान यात्रा एक अविस्मरणीय अनुभव रहा, जिसने मुझे इस राज्य की विविधता और समृद्ध विरासत से परिचित कराया। सबसे पहले, जयपुर, जिसे 'पिंक सिटी' कहा जाता है, में कदम रखते ही यहाँ की रंगीनता और वास्तुकला ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया। हवा महल, सिटी पैलेस और आमेर किला, यहाँ के प्रमुख आकर्षण हैं। इन स्थानों पर घूमते हुए, मुझे राजस्थान के गौरवशाली इतिहास और स्थापत्य कला की झलक मिली। इसके बाद, मैं जोधपुर पहुँचा, जिसे 'ब्लू सिटी' के नाम से जाना जाता है। यहाँ के मेहरानगढ़ किले से जोधपुर शहर का नज़ारा अद्भुत था। इस शहर की नीली रंगत और यहाँ के घरों की अनोखी बनावट ने मुझे बेहद प्रभावित किया। जैसलमेर, जिसे 'सोनार किला' के कारण 'गोल्डन सिटी' कहा जाता है, मेरी यात्रा का सबसे रोमांचक हिस्सा था। यहाँ के रेत के टीले, विशेष रूप से थार रेगिस्तान में ऊँट की सवारी, एक अद्वितीय अनुभव था। जैसलमेर किला और पटवों की हवेली जैसे स्थानों ने मुझे यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर से रूबरू कराया। उदयपुर, जिसे 'सिटी ऑफ लेक' के नाम से भी जाना जाता है, अपनी झीलों और महलों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ का सिटी पैलेस और पिछोला झील पर बोट राइड ने मेरी यात्रा को और भी खास बना दिया।राजस्थान का खानपान भी यात्रा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा। दाल-बाटी-चूरमा, गट्टे की सब्जी और केर-सांगरी जैसे पारंपरिक व्यंजन मेरे लिए नए और स्वादिष्ट अनुभव थे।

कुल मिलाकर, राजस्थान यात्रा ने मुझे न केवल यहाँ की भव्यता और संस्कृति से परिचित कराया, बल्कि यहाँ के लोगों की अतिथि सत्कार की भावना ने भी मुझे बहुत प्रभावित किया। राजस्थान की यात्रा, हर भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक के लिए एक बार अवश्य करने योग्य अनुभव है, जो जीवन भर यादगार रहेगा।

मैं तटरक्षक का नाविक हूँ

समादेशक (क.व.) संजय कुमार
भारतीय तटरक्षक पोत अमृत कौर

मैं तटरक्षक का नाविक हूँ |
इस देश का वीर सिपाही हूँ ||
निकला हूँ मै ठानकर |
करूँगा रक्षा मानव की, खेलकर अपनी जान पर||

मैं तटरक्षक का नाविक हूँ |
इस देश का वीर सिपाही हूँ ||

भले आये तूफान या हो लहरों का सैलाब |
करूँगा रक्षा डटकर, अपनी सागर सीमाओं की ||

सागर में जब खोजना हो किसी को, या हो तेल रिसाव |
क्षितिज पर प्रकट होगा, भारतीय तटरक्षक का जहाज ||

मछुआरों को मान लिया है, हमने अपना परिवार |
करनी हैं रक्षा इनकी चाहे जाना पड़े मीलों हजार ||

मैं तटरक्षक का नाविक हूँ |
इस देश का वीर सिपाही हूँ ||
इस देश की प्रगति के हम भी भागीदार हैं |
व्यापारी जहाजों की रक्षा करने में, हमारा भी अहम् किरदार है ||

पहले धर्म है मेरा जीवन रक्षा |
दूसरा समुद्र जीवन की सुरक्षा ||

मैं तटरक्षक का नाविक हूँ |
इस देश का वीर सिपाही हूँ ||

जिन्दगी बाँसुरी सी हो गई

जीतेन्द्र सिंह, प्रधान नाविक (आर पी), 11999-डबब्लू
88 वायु उपदान वाहन जत्था

जिन्दगी जो बेसुरी थी, वो बाँसुरी सी हो गई
कल तक जो अधूरी-सी थी, वह फिर पूर्ण हो गई
क्या पता क्या हो रहा है, कौन जागा कौन सो रहा
कौन क्या - क्या काटता है, कौन क्या - क्या बो रहा
किसको किससे क्या मिला है, कौन किसको खो रहा
कोई भी न जानता है, कब कहाँ क्या हो रहा
इच्छाओं के पीछे भागे, किरकिरी-सी हो गई
जिन्दगी जो बेसुरी थी, वो बाँसुरी-सी हो गई
सबकी चाल ढाल जैसे, शतरंजी बिसात-सी
दिन की रोशनी भी यहाँ, लगे काली रात-सी
रिश्तेदारियां बनी है, पतझड़ों के पात - सी
नेट पर ही चैट होती, हेलो हाय बात-सी
धड़कनों का क्या भरोसा, सिरफिरी-सी हो गई
जिन्दगी जो बेसुरी थी, वो बाँसुरी-सी हो गई
फर्क कितना भूल बैठे, हम मकर और मीन (मगर और मीन) में
सांप विषैले पल रहे हैं, अपनी आस्तीन में
हमनें रक्तबीज बोएं, मन की इस ज़मीन में
सिर्फ व्याभिचार घोला, उम्र के हर सीन में
इस क़दर इन्सानियत ये, आसुरी-सी हो गई
जिन्दगी जो बेसुरी थी, वो बाँसुरी-सी हो गई
वो जीएं मरें भले ही, बस मुझे मुनाफा हो
ज़मीर बेच के भी मेरे, अर्थ का इज़ाफा हो
मैं ही मैं करता रहा मैं, ये अहम की हार है
इसलिए ही वक्त की भी, मार है फटकार है
आदमी की बेबसी अब, हिमगिरी-सी हो गई
जिन्दगी जो बेसुरी थी, वो बाँसुरी सी हो गई

झूठ जब सर उठाये

ब्रिजेश कुमार, उत्तम नाविक (आर ओ), 05515-P
88 एसीवी स्क्वॉड्रन

झूठ जब भी सर उठाये वार होना चाहिए,
सच को सिंहासन पे ही हर बार होना चाहिए।

बात की गांठें ज़रा ढीली ही रहने दो मियाँ,
हो किला मज़बूत लेकिन द्वार होना चाहिए।

फ़िक्र ऐसी हो कि हम फाके में भी सुल्तान हों,
क्या ज़रूरी है कि बंगला - कार होना चहिये।

मैं क्यूँ दुनिया से मिलूँ कैफ़ी और साहिर की तरह,
पास तुम आओ तो मन गुलज़ार होना चाहिए।

घर से पाठशाला तक मेरा बचपन कहीं गुम हो गया,
जी करे हर रोज़ ही इतवार होना चाहिए।

साफ़गोई है तो दिल चेहरे से झांकेगा ज़रूर,
आदमी लिपटा हुआ अखबार होना चाहिए।

मुल्क की खातिर फ़कत झंडें न फहराएँ हुजूर,
इश्क है तो इश्क का इज़हार होना चाहिए।

जीवन की राहें

पंकज कुमार पाण्डेय, पी एस ई (ई आर), 07991- क्यू 88 एसीवी स्क्वॉड्रन

राहों में चलने का साहस हो,
हर कदम पर विश्वास हो,
मुश्किलें चाहे जितनी आएं,
हमें न कोई निराश हो।

सपनों की ऊँची उड़ान हो,
हर दिल में एक अरमान हो,
संघर्षों से न घबराएं,
जीवन का यही विधान हो।

जीवन की राहें हैं कठिन,
सपनों के सफर में पल-पल,
आओ मिलकर चलें हम,
रचें नया एक कल।

बेटियाँ

मंजीत कुमार सिंह, प्रधान नाविक (एम ई), 12744-आर
88 एसीवी स्क्वॉड्रन

एक चेहरा है कोमल-सा,
रूप है कोमल परी-सा,
इनसे सीखा जिंदगी का सबक,
बेटियाँ तो है लम्बी खुशी-सी।

ये अगर है तो रोशन जहां है,
है वजूद इनसे आदमी का,
हमने रब को तो देखा नहीं,
पर नूर ये है खुदा ये जमीन का।

बेटियाँ एक एहसास है रोशनी का,
इनसे इनकी अदाएँ ना छीनों,
हक इन्हें भी तो है जीने का,
इनसे इनकी सदाएँ ना छीनों,
बेटियाँ है तो लम्बी खुशी है जिंदगी की।

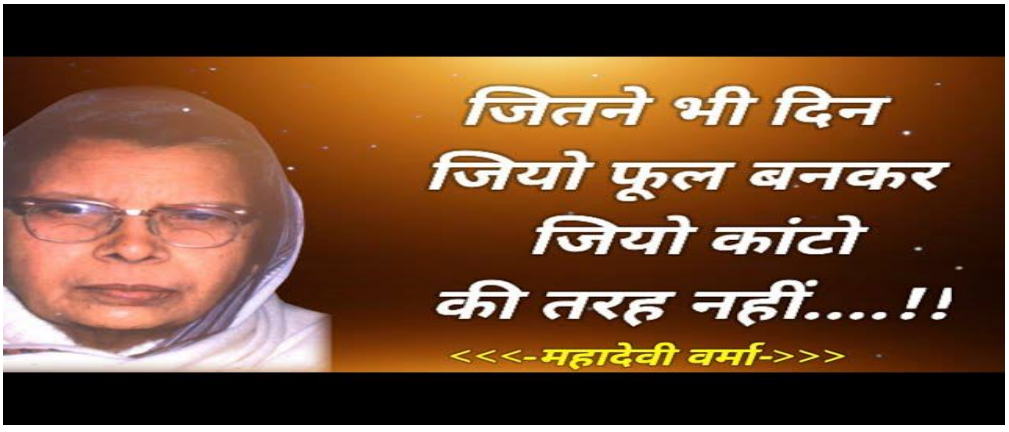

मैं सवेरा हूँ

शैलेश कुमार यादव, प्रधान नाविक (रायटर), 12723-एस
88 एसीवी स्क्वॉड्रन

कैसे बदलोगे मुझे
मैं सवेरा हूं, हर रात के बाद आऊंगा,

कैसे ठुकराओगे मुझे
मैं हकीकत हूं, हर ख़्वाब के बाद आऊंगा,

कैसे समझाओगे मुझे
मैं जवाब हूं, हर सवाल के बाद आऊंगा,

कैसे भुलाओगे मुझे
मैं याद हूं, हर मुलाकात के बाद आऊंगा,

कैसे संभालोगे मुझे
मैं सैलाब हूं, हर तूफ़ान के बाद आऊंगा,

कैसे बदलोगे मुझे
मैं सवेरा हूं, हर रात के बाद आऊंगा....

सुंदरवन और संरक्षण

आलिशा कुमारी, चार्जमैन
तटरक्षक मरम्मत एवं निर्माण दल कोलकाता

सुंदरवन घाटी की जंगल,
अनेकों प्रजातियों के क्रीडा का स्थल |
पक्षी, कछुआ, मगर हो या साँप,
सबको यह देती आराम और छांव|
यहाँ की हर पेड़ की शाखा,
देता है प्रकृति को आशा |
हरे भरे बागों की सुंदरता,
हर प्राणियों के मन को भाता |
पक्षियों की चहचहाहट, हवाओ की सनसनाहट,
देता है मन को सुकून और राहत |
कलकलाती समंदर की लहरें,
हर रोज का सूर्योदय और सूर्यास्त,
देते हमें नव रंग, नव चेहरा और नया उत्साह |
बंगाल टाइगर है इस वन की शान,
इसका संरक्षण भी है हमारा काम |
किन्तु अब संकट में है यह हरा भरा संसार,
हमारी ही लापरवाही इसे कर रही है बेकार |
सुंदरवन का संरक्षण के लिए
आओ मिलकर हम ये कदम उठाये,
पेड़ लगाएँ, प्रदूषण घटाएँ और जीवों का भविष्य बचाएं|

खटमिट्ठियाँ

उप समादेशकप्रेमांशु मिश्र
तटरक्षक मरम्मत एवं निर्माण दल कोलकाता

कहा था कई मर्तबे मैंने,
डाल दो खटमिट्ठियाँ।
जानता था शायद मन,
हठात शेष होंगी छुट्टियाँ।
वहाँ तो बस रंजिशें हैं,
मार है बारूद की, हथियार की|
कोई एक गोली चूम गई,
जीवन की धड़कन रूठ गई|
अब इसको कौन मनाएगा?
स्वाद अधूरा रह जाएगा|
खा लीं होती खटमिट्ठियाँ,
शेष होने से पहले छुट्टियाँ।

ओलंपिक 2024 की समीक्षा

चन्दन प्रकाश, अधिकारी (एस ए)
तटरक्षक भंडार डिपो पारादीप

मनु भाकर जैसी बेटी, एयर पिस्टल में, पहला कांस्य पदक दिलाती है।
पुन: सरबजोत सिंह के साथ, दूसरा कांस्य पदक भी जीत जाती है।
विनेश फोगाट तकनीकी कारण से, कुश्ती के फाइनल से, बाहर होती है।
आपको भले ही अयोग्य कर दे, आप देश के लिए जीत जाती है।
आपको लड़ता देख, आप गांव एवं शहरों की बेटियों की रोल मॉडल बन जाती है।
हॉकी में कप्तान हरमनप्रीत सिंह का, दो गोल याद दिलाता है ।
दो कांस्य पदक पाकर, 1972 के बाद, ऑस्ट्रेलिया को हराता है।
अपनी मेहनत के पुरुषार्थ से, जैवलिन थ्रो में, नीरज चोपड़ा सिल्वर पदक पाता है।
कुश्ती में भारत सोलह साल की, विरासत कायम रखता है।
हर बार कोई ना कोई पदक लाता है,
2024 में भी अमन सहरावत कांस्य पदक पाता है ।
देश के युवा उठो, जागो प्यारे, अपना लक्ष्य पहचानना होगा।
140 करोड़ वाले देश के लिए,
5 कांस्य पदक और 1 सिल्वर पदक लाना क्या काफी होगा?
अपना दम खम लगाकर, अभी से तैयारी में जुट जाना होगा।
चीन, अमेरिका ऑस्ट्रेलिया जैसे हमें भी गोल्ड मेडल लाना होगा।
अंक तालिका में 71 वें स्थान से, भारत को आगे बढ़ना होगा।
मेहनत, तकनीकी कौशल एवं निरंतर प्रयास से, खुद को प्रखर बनाना होगा।
2028 ओलंपिक में ढेर सारा गोल्ड मेडल लाना होगा।

भिखारी की हालत

परवेश कुमार, उत्तम नाविक (एस ई)
तटरक्षक वायु परिक्षेत्र भुवनेश्वर

दया आ रही थी उस पर, हालत देख बेचारे की |
मांग रहा था मदद वह, कौन करे मदद गवारे की||

कपड़े उसके फटे थे, बाल उसके बढ़े हुए थे|
मदद मांगने को वह, हाथ फैलाकर खड़े हुए थे||

बैठ गया वह हार कर, रख माथे पर हाथ|
पूछ रहा भगवान से, कौन है मेरे साथ||

अकेला सा पड़ गया, देख जमाना रोने लगा|
जो कुछ भी था उसके पास, उसको भी वह खोने लगा||

ठंड जब लगी होगी, हाथ बगल में दिए होंगे|
मिल जाए मदद कहीं से, लाख जतन किए होंगे||

देखने से पता लगता, है उसको कोई बीमारी|
हालत उसकी ऐसे जैसे, जैसे कोई भिखारी||

पर्यावरण

कुन्दन कुमार, अवर श्रेणी लिपिक
भारतीय तटरक्षक अवस्थान फ्रेज़रगंज

पर्यावरण शब्द की रचना संस्कृत के उपसर्ग 'परि' और 'आवरण' से की गई । पर्यावरण उन सभी भौतिक, रासायनिक एवं जैविक कारकों की समष्टिगत एक इकाई है, जो किसी जीवधारी अथवा पारितंत्रीय आबादी को प्रभावित करते हैं तथा उनके रूप, जीवन और जीविका को तय करते हैं । अपने परिवेश में हम तरह-तरह के जीव-जन्तु, पेड़-पौधे तथा अन्य सजीव-निर्जीव वस्तुएँ पाते हैं। ये सब मिलकर पर्यावरण की रचना करते हैं। सामान्य अर्थों में यह हमारे जीवन को प्रभावित करने वाली अपनी समस्त क्रियाओं से इस पर्यावरण को भी प्रभावित करते हैं। इस प्रकार एक जीवधारी और उसके पर्यावरण के बीच अन्योन्याश्रित संबंध भी होता है। पर्यावरण के जैविक संघटकों में सभी सजीव तथा उनसे जुड़ी सारी जैव क्रियाएँ और अजैविक संघटकों में निर्जीव तत्व तथा उनसे जुड़ी क्रियाएँ आती हैं । सामान्यतः पर्यावरण को मनुष्य के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है और मनुष्य को एक अलग इकाई तथा उसके चारों ओर व्याप्त अन्य समस्त चीजों को उसका पर्यावरण माना जाता है। वस्तुतः मनुष्य को पर्यावरण से अलग मानने वाले वे हैं, जो तकनीकी रूप से विकसित हैं और विज्ञान और तकनीकी के व्यापक प्रयोग से अपनी प्राकृतिक दशाओं में काफ़ी बदलाव लाने में समर्थ हैं।

तकनीकी मानव ने अपने दैनिक क्रिया-कलापों से आर्थिक उद्देश्य और जीवन में विलासिता के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्राकृतिक पर्यावरण का संतुलन नष्ट किया है, जिससे प्राकृतिक व्यवस्था या प्रणाली के अस्तित्व पर ही संकट उत्पन्न हो गया है। इस तरह की समस्याएँ पर्यावरणीय अवनयन कहलाती हैं।

पर्यावरणीय समस्याएँ मनुष्य को अपनी जीवन-शैली के बारे में पुनर्विचार के लिए प्रेरित कर रही हैं और अब पर्यावरण संरक्षण तथा पर्यावरण प्रबंधन की चर्चा का समय है। मनुष्य वैज्ञानिक और तकनीकी रूप से अपने द्वारा किए गए परिवर्तनों से नुकसान को कितना कम करने में सक्षम है, आर्थिक और राजनैतिक हितों की टकराव में पर्यावरण पर कितना ध्यान दिया जा रहा है और मनुष्यता अपने पर्यावरण के प्रति कितनी जागरूक है, यह आज के ज्वलंत प्रश्न हैं, लेकिन आज लोगों में इसे लेकर कितनी जागरूकता है, इस पर भी विचार किया जाना चाहिए। ग्रामीण समाज को छोड़ दें, तो भी महानगरीय जीवन में इसके प्रति खास उत्सुकता नहीं पाई जाती। परिणामस्वरूप पर्यावरण सुरक्षा महज एक सरकारी एजेण्डा ही बन कर रह गया है। जब तक इसके प्रति लोगों में एक स्वाभाविक लगाव पैदा नहीं होता, पर्यावरण संरक्षण एक दूर का सपना ही बना रहेगा।

पर्यावरणीय प्रदूषण की गति इतनी तेज है कि सामान्य और प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा इसका परिक्षेपण, मंदन, वियोजन, पुनर्चक्रण थोड़ा मुश्किल है। प्रदूषण का वर्गीकरण वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण इत्यादि में किया गया है। इसका पारितंत्र में प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है । वहीं दूसरी ओर रेडियोधर्मी प्रदूषण, प्रकाश प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण इत्यादि प्रकार, प्रदूषण के स्वयं के प्रकार पर आधारित वर्गीकरण हैं।

नगरीकरण तथा औद्योगिकरण के कारण पर्यावरण का अधिक से अधिक दोहन हो रहा है, जिससे पर्यावरण का संतुलन बिगड़ता जा रहा है, जैसे कहीं सूखा तो कहीं अतिवृष्टि जैसी समस्याएं उत्पन्न होती जा रही हैं। जो जमीन कल तक उपजाऊ थी, आज देखा जाए तो उसमें अच्छी फसल नहीं होती और ऐसा प्रतीत होता है कि आने वाले समय मे यह बंजर हो जाएगी। इससे जीवन समाप्त हो जाएगा और यह फिर से वही आकाश पिण्ड का गोला बनकर रह जाएगी। ज्यादातर पर्यावरणीय समस्याएँ पर्यावरणीय अवनयन, मानव जनसंख्या और मानव द्वारा संसाधनों के उपभोग में वृद्धि से जुड़ी हैं। अतः इसके अंतर्गत प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का क्षरण और अन्य प्राकृतिक आपदाएं इत्यादि शामिल की जाती हैं। पर्यावरणीय अवनयन के साथ मिलकर जनसंख्या में चरघातांकी दर से हो रही वृद्धि तथा मानव द्वारा उपभोग के बदलते प्रतिरूप लगभग सारी पर्यावरणीय समस्याओं के मूल कारण हैं।

शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति के अन्दर शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक बुद्धि एवं परिपक्वता लाना है। पर्यावरण तथा शिक्षा के अन्तर्सम्बन्धों का ज्ञान हासिल करके कोई भी व्यक्ति इस दिशा में अनेक महत्वपूर्ण कार्य कर सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में पर्यावरण का ज्ञान मानवीय सुरक्षा के लिए आवश्यक है।

पर्यावरण संरक्षण का समस्त प्राणियों के जीवन तथा धरती के समस्त प्राकृतिक परिवेश से घनिष्ठ सम्बन्ध है। प्रदूषण के कारण सारी पृथ्वी दूषित हो रही है और निकट भविष्य में मानव सभ्यता का अंत दिखाई दे रहा है। इस स्थिति को ध्यान में रखकर सन् 1992 में ब्राजील में विश्व के 174 देशों का 'पृथ्वी सम्मेलन' आयोजित किया गया। इसके पश्चात सन् 2002 में जोहान्सबर्ग में पृथ्वी सम्मेलन आयोजित कर, विश्व के सभी देशों को पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान देने के लिए अनेक उपाय सुझाए गए। वस्तुतः पर्यावरण के संरक्षण से ही धरती पर जीवन का संरक्षण हो सकता है, अन्यथा मंगल ग्रह आदि ग्रहों की तरह धरती का जीवन-चक्र भी समाप्त हो जायेगा।

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण को विशेष महत्त्व दिया गया है। प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के अनेक घटकों जैसे वृक्ष, जल, वायु, अग्नि, समुद्र, नदी, धरा को देवतुल्य मान कर उनकी पूजा की जाती है। प्राचीन काल से ही भारत में पर्यावरण के विविध स्वरुपों की पूजा होती है।

अत: पर्यावरण का संरक्षण करना हमारे लिए अब जीवन का मूल उद्देश्य बनाने का समय है, जिससे हमें आने वाले पीढ़ियों को एक स्वच्छ पर्यावरण प्रदान कर सकें ।

तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) के द्वारा विभिन्न गतिविधियां

तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.), कोलकाता में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन

राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार के कार्यालयों में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन करना अनिवार्य है| दिनांक 31 मई 24 को इस मुख्यालय एवं इसके अधीनस्थ कार्यालयों एवं पोतों में हिन्दी में कार्य करने में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन ऑनलाइन एवं ऑफलाइन के माध्यम से किया गया है इस कार्यशाला का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है:-

क्र.	संकाय	सत्र एवं दिनांक	माध्यम	विषय	टिप्पणी
(क)	श्री चंद्र गोपाल शर्मा, सेवानिवृत्त उप महाप्रबंधक (राजभाषा), पूर्व रेलवे, कोलकाता	दो सत्र, 31 मई 24, 10:00 बजे से	ऑफलाइन	भारत सरकार में द्विभाषिकता एवं अधिकारियों के उत्तरदायित्व	इस मुख्यालय तथा कोलकाता स्थित अधीनस्थ कार्यालयों में कार्यरत लगभग 23 अधिकारियों ने भाग लिया
(ख)	श्री गुड्डू कुमार शर्मा, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	दो सत्र, 31 मई 24, 14:30 बजे से	ऑनलाइन (गूगलमीट)	तिमाही प्रगति रिपोर्ट कैसे भरें?	इस मुख्यालय के अधीनस्थ कार्यालय एवं पोतों में कार्यरत 43 अधिकारियों एवं कार्मिकों ने भाग लिया

हिंदी कार्यशाला के पहले दो सत्र में अतिथि संकाय के रूप में श्री चंद्र गोपाल शर्मा, सेवानिवृत्त उप महाप्रबंधक (राजभाषा), पूर्व रेलवे, कोलकाता उपस्थित हुए थे| कार्यशाला का आरंभ महानिरीक्षक इकबाल सिंह चौहान, तटरक्षक पदक, कमांडर, तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) के सम्बोधन से हुआ| आदरणीय कमांडर महोदय ने अतिथि संकाय का स्वागत किया तथा कार्यशाला में उपस्थित सभी अधिकारियों से अपील किया कि सभी अधिकारीगण अपना अधिकांश कार्यालयी कार्य हिंदी में करें तथा हिंदीत्तर भाषी अधिकारियों एवं कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करें एवं इस मुख्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन को और अधिक प्रभावी बनाएँ।

कमांडर महोदय के सम्बोधन के पश्चात अतिथि संकाय ने कार्यशाला का आरंभ कर 'भारत सरकार में द्विभाषिकता एवं अधिकारियों के उत्तरदायित्व' विषय पर उपस्थित सभी अधिकारियों का मार्ग दर्शन किया| धन्यवाद ज्ञापन के अवसर पर आदरणीय स्टाफ प्रमुख महोदय ने आशा व्यक्त किया कि भविष्य में राजभाषा हिन्दी का कार्यान्वयन इस मुख्यालय में काफी प्रभावी रूप से होगा तथा सभी से आग्रह किया कि सभी अपने अनुभाग में यथासंभव राजभाषा का प्रयोग करें एवं हिन्दी को कार्यालयी कार्यों में उचित स्थान प्रदान करें|

हिंदी कार्यशाला के अपराह्न सत्र का आयोजन ऑनलाइन (गूगलमीट) के माध्यम से अधीनस्थ कार्यालयों एवं पोतों में कार्यरत अधिकारियों एवं कार्मिकों के लिए 'तिमाही हिंदी प्रगति रिपोर्ट कैसे भरे ?' विषय पर किया गया| इस सत्र के वक्ता श्री गुड्डू कुमार शर्मा, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी थे तथा इस कार्यशाला में अधीनस्थ कार्यालय एवं पोतों से लगभग 43 अधिकारियों एवं कार्मिकों ने भाग लेकर इसे सफल बनाया|

तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) के द्वारा विभिन्न गतिविधियां

तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.), को नराकास (कार्यालय-4), कोलकाता द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु विशेष पुरस्कार

दिनांक 26 जुलाई 24 को तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उत्तर पूर्व) को वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-4), कोलकाता की पाँचवी बैठक में संघ सरकार की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस मुख्यालय को नराकास कोलकाता द्वारा मिलने वाला यह तीसरा पुरस्कार था| इस मुख्यालय के प्रतिनिधियों ने कमांडर, तटरक्षक क्षेत्र (उत्तर पूर्व) की ओर से इस पुरस्कार को ग्रहण किया। इस बैठक में नराकास (कार्यालय-4) कोलकाता के सदस्य कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी गण एवं गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

'रेमल' चक्रवात के दौरान तटरक्षक बल की भूमिका

मध्य बंगाल की खाड़ी में उत्पन्न भीषण चक्रवात 'रेमल' 26 मई 24 की आधी रात को टकराया था| यह इस वर्ष का पहला भीषण चक्रवर्ती तूफान था जो 20 मई 24 को न्यूनता के रूप में विकसित हुआ था जो बाद में 26 मई 24 को एक भीषण चक्रवात में परिवर्तित हो गया|

तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.) ने इस विनाशकारी स्थिति से निपटने के लिए तटरक्षक पोत, वायुयानों एवं ब्रोडकास्ट प्रणाली के सहारे कम समय में चक्रवाती तूफान के रास्ते में आने वाले व्यापारी जहाज, मछली पकड़ने वाली नौकाओं की रक्षा को सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए एवं उन्हें सुरक्षित दिशा की ओर भेजा| तटरक्षक बल के इस समयबद्ध तैयारियों की वजह से इस भीषण चक्रवर्ती तूफान में समुद्र में एक भी जान-माल की हानि नहीं हुई और हमेशा की तरह अपने आदर्श वाक्य 'वयम रक्षाम:' को चरितार्थ किया|

जब यह चक्रवात भूमिगत हो गया तब भारतीय तटरक्षक बल ने समुद्री जान-माल की शून्य क्षति को सुनिश्चित करने के लिए समुद्र में तटरक्षक पोत वरद एवं वायुयानों को भेजा|

रथ यात्रा महोत्सव-24 (उत्सव-24) में भारतीय तटरक्षक बल की भूमिका

भगवान जगन्नाथ पुरी की रथ यात्रा हर साल जून/जुलाई के महीने में ओड़िशा के पुरी में मनाई जाती है, जहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु देश के विभिन्न हिस्सों से इस उत्सव में भाग लेने के लिए आते हैं| इस साल यह उत्सव 07 जुलाई 24 से 19 जुलाई 24 तक मनाया गया|

भारतीय तटरक्षक बल हमेशा से ही देश के तटीय सुरक्षा तंत्र के प्रति मानवीय सहायता और ज़िम्मेदारी के रूप में सबसे पुराने और सबसे बड़े हिंदू रथ उत्सव के दौरान सुरक्षा एवं बचाव प्रदान करने में सहायता प्रदान की है|

इस वर्ष भी तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) ने ओड़िशा राज्य के उत्तरदायी क्षेत्रों में समुद्री निगरानी तथा सुरक्षा एवं बचाव को सुनिश्चित करने के लिए 02 एफपीवी, 01 आईबीएस, 02 हेलीकॉप्टर, 01 डोर्नियर तैनात किए| पुरी में किसी भी आपात स्थिति के लिए अतिरिक्त जनशक्ति के साथ एक त्वरित प्रतिक्रिया दल को भी तैयार रखा गया था|

तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का पालन

सर्वप्रथम 21 जून 2015 को पूरे विश्व में प्रथम योग दिवस का पालन किया गया था और तभी से भारत सहित पूरे विश्व में 21 जून को योग दिवस का पालन किया जाता है| योग व्यायाम एक ऐसा प्रभावशाली कार्य है जिसके माध्यम से न केवल शरीर के अंगों बल्कि मन, मस्तिष्क और आत्मा को संतुलन बनाया जाता है| यह एक ऐसी क्रिया है जिसके द्वारा शारीरिक व्याधियों के अलावा मानसिक समस्याओं से भी निजात पाई जा सकती है| योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के युज से हुई है, जिसका मतलब होता है आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन| अंतरराष्ट्रीय योग दिवस शारीरिक फिटनेस, मानसिक कल्याण और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है|

इस मुख्यालय द्वारा 21 जून 24 को एक विशाल योग कार्यशाला का आयोजन किया गया| योग का विषय था "स्वयं और समाज के लिए योग"| इस अवसर पर एनएसएचएम प्रबंधन एवं तकनीकी कॉलेज से 03 योगाचार्य उपस्थित हुए थे| जिन्होने योग के विभिन्न योग क्रियाओं से सभी लोगों का मार्गदर्शन किया| आदरणीय कमांडर महोदय ने सभी योगाचार्यों को स्मृति चिन्ह प्रदान किया|

तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) द्वारा 'हर घर तिरंगा' अभियान का पालन

हमारा तिरंगा हमारे देश की शान है| हम भारतीय तिरंगे की खातिर सबकुछ न्यौछावर करने की सोच रखते हैं, बस हमारी सोच यही रहती है कि कैसे भी हमारा तिरंगा शान से लहराता रहे| स्वतन्त्रता दिवस एक ऐसा उत्सव होता है जब देशभर में तिरंगा फहराकर आजादी का जश्न मनाया जाता है| आजादी के अमृत महोत्सव (साल-2022) पर हमारे झंडे को और अधिक महत्वपूर्ण बनाने के लिए भारत में एक अभियान "हर घर तिरंगा" शुरू किया गया था तब से यह हर साल होता है|

यह अभियान की शुरुआत भारत सरकार की ओर से की गई थी| हर साल यह अभियान 13 अगस्त से शुरू होकर 15 अगस्त तक चलता है| इस अभियान के दौरान लोगों से अपेल के जाती है कि वह अपने घरों पर राष्ट्रीय ध्वज को फहराएं| इस मुख्यालय तथा इसके अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा इस वर्ष भी हर घर तिरंगा अभियान का पालन किया गया है तथा विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया|

भारतीय तटरक्षक बल का हथियार प्रशिक्षण शिविर 'होशियार-24' का आयोजन

भारतीय तटरक्षक बल का हथियार प्रशिक्षण शिविर 'होशियार-24' का दूसरा संस्करण 27 से 31 मई तक आयोजित किया गया| प्रशिक्षण को दो चरणों में विभाजित किया गया था| पोत पर अभ्यास चरण के दौरान वास्तविक समय प्रशिक्षण सत्र सभी परिस्थितियों में भूमि के क़ानूनों को लागू करने के लिए समुद्र में बोर्डिंग क्षमताओं को मजबूत करने के लिए महत्वपूर्ण था| इस शिविर के आयोजन में चालक दल के लिए अभ्यास और योग्य प्रशिक्षक द्वारा प्रशिक्षण के साथ अनुभव साझा करने से बोर्डिंग का विरोध करने और सभी प्रकार के अपरम्परागत खतरों का सामना करने के लिए सिद्धान्त की पुष्टि सुनिश्चित हुई| प्रशिक्षण मुख्य रूप से भारतीय तटरक्षक को समुद्री डकैती विरोधी मिशन, समुद्र में आतंकवाद विरोधी अभियान चलाने में मदद करता है|

शिविर होशियार-24 के अंत में प्रतिभागियों द्वारा प्रदर्शित एक मंत्रमुग्ध निरंतरता ड्रिल के साथ हुआ, जिसके बाद प्रभावशाली कैंप फायर और रंगारंग सांस्कृति कार्यक्रम का आयोजन किया गया| शिविर होशियार ने टीम निर्माण, आत्म-प्रबंधन, कमान और नियंत्रण के कई महत्वपूर्ण पाठ का प्रशिक्षण दिया गया|

'समुद्री सुरक्षा मॉड्यूल' के ज्ञानार्जन हेतु 76 आरआर बैच के आई पी एस प्रशिक्षुओं का दौरा

76 आरआर बैच के 26 (08 महिला अधिकारी सहित) भारतीय पुलिस सेवा (आई पी एस) प्रशिक्षुओं और 02 विदेशी अधिकारी (मालदीव और भूटान) का एक समूह 'समुद्री सुरक्षा मॉड्यूल' को समझने के लिए जुलाई 24 में तटरक्षक जिला मुख्यालय-8, हल्दिया एवं तटरक्षक जिला मुख्यालय-7, पारादीप में आगमन हुआ था| यह दौरा सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी, हैदराबाद द्वारा आयोजित समुद्री सुरक्षा मॉड्यूल का एक हिस्सा था| इस मॉड्यूल का प्राथमिक उद्देश्य अधिकारी प्रशिक्षुओं को समुद्री सुरक्षा और भारतीय तटरक्षक के संचालन के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराना था|

तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.) में आई टी प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.) द्वारा 17 मई 24 को साइबर सुरक्षा, स्वच्छता और सुरक्षा प्रोटोकॉल/तंत्र पर एक क्षेत्रीय सूचना प्रौद्योगिकी कार्यशाला का आयोजन किया गया है। साइबर सुरक्षा और आईटी प्रशिक्षण का उद्देश्य गोपनीयता सुनिश्चित करते हुए संगठन को साइबर खतरों से बचाने में सक्षम कुशल कार्यबल विकसित करना है। इस कार्यशाला का उद्देश्य डिजिटल संपत्तियों की अखंडता और उपलब्धता, और संगठन के समग्र डिजिटल परिवर्तन और लचीलेपन का समर्थन करना था|

तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन

इस मुख्यालय द्वारा "विश्व रक्तदान दिवस" के अवसर पर 14 जून 24 को टाटा मेडिकल हॉस्पिटल, न्यू टाउन के सहयोग से एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। कोलकाता स्थित तटरक्षक इकाइयों के सैन्य एवं असैन्य अधिकारियों/कार्मिकों सहित कुल 30 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। रक्तदान महादान है| मानव कल्याण की भावना के साथ इसका आयोजन किया गया था|

हिंदी है हम
वतन है हिन्दुस्तान हमारा।
सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा।
जय हिन्द, जय भारत।
हिंदी दिवस
की शुभकामनाएं